रैदास

रैदास नाम से विख्यात संत कवि रविदास का जन्म बनारस में सन् 1388 में और निर्वाण बनारस में ही सन् 1518 में हुआ, ऐसा माना जाता है । इनकी ख्याति से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था । मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है । कबीर की तरह रैदास भी संत कोटि के कवियों में गिने जाते हैं । मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों में रैदास का जरा भी विश्वास न था । वह व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे ।

रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है । रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं । सीधे-सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं । इनका आत्मनिवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्वेलित करते हैं । रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहब' में भी सम्मिलित हैं ।

यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं । पहले पद 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है । उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजता, बल्कि उसके अपने अंतस् में सदा विद्यमान रहता है । यही नहीं, वह हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है । इसीलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है ।

दूसरे पद में कवि निर्गुण भक्ति की सार्थकता सिद्ध करते हुए सगुण भक्ति और कर्मकांड की निरर्थकता बताता है । कवि की नजर में ईश्वर की पूजा-अर्चना के लिए चढ़ाए जाने वाले फल-फूल-जल अनूठे नहीं हैं । वे जूठे और गँदले हैं । इसलिए कवि पूजा-अर्चना के कर्मकांड में न पड़कर मन-ही-मन ईश्वर की पूजा करता है और अपने भीतर ही ईश्वर के सहज स्वरूप की छवि बनाता है ।

(१)

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी ।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती ।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

(२)

राम मैं पूजा कहाँ चढ़ाऊँ । फल अरु मूल अनूप न पाऊँ ।।
थनहर दूध जो बछरू जुठारी । पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ।।
मलयागिरी बेधियो भुअंगा । विष अमृत दोऊ एकै संगा ।।
मन ही पूजा मन ही धूप । मन ही सेऊँ सहज सरूप ।।
पूजा अरचा न जानूँ तेरी । कह रैदास कवन गति मेरी ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. रैदास ईश्वर की कैसी भक्ति करते हैं ?
2. कवि ने 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' क्यों कहा है ?
3. कवि ने भगवान और भक्त की तुलना किन-किन चीजों से की है ?
4. कवि ने अपने ईश्वर को किन-किन नामों से पुकारा है ?
5. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
6. पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, यथा - पानी-समानी, मोरा-चकोरा । इस पद के अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखें ।
7. ''मलयागिरि बेधियो भुअंगा । विष अमृत दोऊ एकै संगा ।'' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें ।
8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए –
   (क) जाकी अँग-अँग बास समानी
   (ख) जैसे चितवत चंद चकोरा
   (ग) थनहर दूध जो बछरू जुठारी
9. रैदास अपने स्वामी राम की पूजा में कैसी असमर्थता जाहिर करते हैं ?
10. कवि अपने मन को चकोर के मन की भाँति क्यों कहते हैं ?
11. रैदास के राम का परिचय दीजिए ।
12. 'मन ही पूजा मन ही धूप । मन ही सेऊँ सहज सरूप ।' का भाव स्पष्ट करें ।
13. रैदास की भक्ति भावना का परिचय दीजिए ।
14. पठित पद के आधार पर निर्गुण भक्ति की विशेषताएँ बताइए ।
15. 'जाकी जोति बरै दिन राती' को स्पष्ट करें ।
16. भक्त कवि ने अपने आराध्य के समक्ष अपने आपको दीनहीन माना है । क्यों ?
17. 'पूजा अरचा न जानूँ तेरी' कहने के बावजूद कवि अपनी प्रार्थना क्षमा-याचना के रूप में करते हैं । क्यों ?

कविता के आस-पास

1. पाठ में आए दोनों पदों को याद कीजिए और कक्षा में गाकर सुनाइए ।
2. भक्त कवि कबीर, नानक, नामदेव, मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए ।
3. रैदास के समकालीन कवियों की जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।

4. संकलित पदों के आधार पर रैदास के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्‌भाव संबंधी विचारों पर एक निबंध लिखिए ।
5. रैदास विविध कर्मकांडों में ईश्वर को न खोजकर स्वयं में ईश्वर की छवि बनाते हैं । आप ईश्वर को किस रूप में देखते हैं ? इस पर अपने विचार व्यक्त करें ।

भाषा की बात

1. पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं । ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए - यथा : दीपक - बाती
2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   पानी, चंद्रमा, रात, मीन, भुअंग

शब्द निधि

बास	:	गंध
समानी	:	समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)
घन	:	बादल
मोरा	:	मोर, मयूर
चितवत	:	देखना, निरखना
चकोर	:	तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
बाती	:	बत्ती, रूई या पुराने कपड़े को ऐंठकर बनाई हुई पतली पूनी जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं
जोति	:	ज्योति, देवता की प्रसन्नता के लिए जलाया जानेवाला दीपक
बरै	:	जलना, प्रकाशित होना
राती	:	रात्रि
सुहागा	:	सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आनेवाला एक क्षार द्रव्य
दासा	:	दास, सेवक
जाकी	:	जिसकी
अरु	:	और
सोनहिं	:	सोना
मूल	:	कंद-मूल
अनूप	:	अनुपम, अद्वितीय
थनहर	:	थान का दूध
जुठारी	:	जूठा करना
पुहुप	:	पुष्प
भँवर	:	भौंरा
बिगारी	:	बिगाड़ना, विकृत करना
बेधियो	:	विंधना, छेद करना
भुअंगा	:	साँप
सेऊँ	:	सेवा करना
मीन	:	मछली
कवन	:	कौन
अरचा	:	अर्चना, पूजा
सरूप	:	स्वरूप